Indian J. Soc.& Pol. 04(02):2017:119-122 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127(O)

एनी बेसेन्ट का भारतीय शिक्षा में योगदान

अम्बुजेश कुमार मिश्र[1]

[1]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

शिक्षा मानव जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता है जो मानव का सर्वांगिण विकास कर उसे सुसंस्कृत एवं सभ्य बनाती है और सभ्य मानव से ही सभ्य समाज का निर्माण होता है। किसी भी देश के पुनरोद्धार ओर पुनर्निमाण में वहॉ के बौद्धिक वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उस देश की शिक्षा व्यवस्था से उत्पन्न यह बौद्धिक वर्ग अपने आदर्शो से समस्त समाज तथा राष्ट्र को विकास की ओर उन्मुख करता है। भारत का शैक्षिक इतिहास अत्यन्त विस्तृत एवं समृद्ध रहा है। यहॉ प्रत्येक युग में सुव्यवस्थित वैज्ञानिक शिक्षा दी जाती रही है। प्राचीन काल में भारत शिक्षा का एक महान केन्द्र था जिसमें तक्षशिला और नालन्दा जैसी सर्वोत्कृष्ट शिक्षण संस्थाएँ थीं जहॉ पूरी दुनिया से शिक्षार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। भारत के अतिरिक्त दुनिया में शिक्षा व्यवस्था की की इतनी गौरवपूर्ण पृष्ठभूमि किसी देश की नही थी, परन्तु धीरे–धीरे उसकी गौरवपूर्ण परम्परा पतन की ओर अग्रसर होती गयी और ब्रिटिश शासन में इसकी पूर्ण समाप्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व देश की शिक्षा व्यवस्था तीन युगों से गुजर चुकी थी–बैदिक युग, बौद्ध युग और मुस्लिम युग। ब्रिटिश शासन स्थापित होने के बाद अंग्रेजो ने भारतीय शिक्षा को पूर्ण रूपेण बदलने का प्रयास किया। सर्वप्रथम ब्रिटिश वायसराय लार्ड विलियम बैंटिक ने शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की घोषणा की, लार्ड मैकाले ने उनकी योजना को कियान्वित करने के लिए एक विवरण पत्र प्रकाशित करवाया जिसमें भारतीय शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन की घोषणा की। इस प्रकार ब्रिटिश शासन के सरकारी कार्यालयों के लिए लिपिक तैयार करना ही अंग्रेजी शिक्षा नीति का प्रमुख उददेश्य हो गया। एनी बेसेन्ट ने भारत आगमन के समय देश की शिक्षा व्यवस्था के प्रति अपना अंसतोष प्रकट किया और तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था पर कठोर प्रहार किये। उनकी दृष्टि में भारत की शिक्षा व्यवस्था से व्यक्ति का सर्वांगिण विकास नही हो पाने के कारण यह अपूर्ण एवं निरर्थक थी।

KEY WORDS : एनी बेसेट, शिक्षा, भारतीय शिक्षा प्रणाली

एनी बेसेन्ट ने भारत आगमन के समय देश की शिक्षा व्यवस्था के प्रति अपना अंसतोष प्रकट किया और तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था पर कठोर प्रहार किये। उनकी दृष्टि में भारत की शिक्षा व्यवस्था से व्यक्ति का सर्वांगिण विकास नही हो पाने के कारण यह अपूर्ण एवं निरर्थक थी।(एनीबेसेंट पृ049) राष्ट्रीय उत्थान के लिए उचित शिक्षा व्यवस्था आवश्यक होती है। उन्हें लगता था कि– भावी शिक्षित लोगों की एक पीढ़ी भारत का नक्शा बदलेगी (मित्तल,2012पृ0127) अतः उन्होने शिक्षा में प्राचीन आदर्शो की पुर्नस्थापना के लिए अथक प्रयास किया। जाति–भेद, रूढ़िवाद एवं अन्ध–विश्वास का विरोध करते हुए प्रचीन भारतीय संस्कृति, संस्कृत भाषा एवं धार्मिक शिक्षा के अध्ययन और अध्यापन पर बल दिया और कहा कि शिक्षा प्राचीन भारतीय आदर्शो पर आधारित होना चाहिए और उनके पाठयक्रम में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए, प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से ही व्यक्ति का सर्वांगिण विकास हो सकता है। अतः उसे पुर्नजीवित करने की आवश्यकता है।(एनीबेसेंट,पृ049) इसलिए उन्होनें प्राचीन भारतीय गुरूकुल व्यवस्था के समान ही शिक्षा देने की मॉग की, ताकि छात्र के जीवन में ब्रम्हचर्य, संयम, अनुशासन, सरल जीवन एवं सात्विक भोजन का महत्व फिर से जागृत हो सके।

एनी बेसेन्ट का मानना था कि धीरे–धीरे नीचे से उपर तक धार्मिक और नैतिक शिक्षा लागू की जानी चाहिए तथा पाश्चात्य विज्ञान एवं तकनीकी का भी अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। अतः भारतीय शिक्षा व्यवस्था में पश्चिम के वैज्ञानिक दृष्टकोण को अपनाने पर बल दिया। उनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक विकास करना था फिर भी भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना चाहती थी जो भारतीय आवश्यकताओं पर आधारित हो, धर्म से भी विमुख न हो ओर पाश्चात्य विज्ञान तथा तकनीकी का पूरा–पूरा लाभ उठा सके। कम से कम फीस लेकर अधिक से अधिक बच्चों को शिक्षा नीति में पूर्व तथा पश्चिम के आदर्शो को मिलाना चाहती थीं। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होनें 7 जुलाई 1898 को बनारस के अपने छोटे से घर में अपने सपनों के शिक्षा केन्द्र की दो कक्षाएं आरम्भ कर दी ओर इसे इलाहाबाद

1:Corresponding Author

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कर दिया।(गुप्त,1999पृ0222) भगवान दास, उपेन्द्र नाथ, ज्ञानेन्द्र नाथ, चक्रवर्ती आर्थर, रिचर्डसन, कुमारी लिलपियन एडगर और कुमारी पालमर के सहयोग से इसे सेन्ट्रल हिन्दू कालेज के रूप में स्थापित किया। यही संस्था "काशी हिन्दू विश्वविद्यालय" के रूप में विकसित हुई।

एनी बेसेन्ट ने जो शिक्षा पद्धति शुरू की उस पर उदारवादी हिन्दू संस्कृति का प्रभाव था परन्तु उनका दायरा संकुचित नही था। उन्होनें विभिन्न धर्मावलम्बियों से आग्रह किया कि अलग–अलग विद्यालय खोलें ताकि आदर्श चरित्र का निर्माण हो सके एवं एक बालक सच्चा भारतीय बन सके। इसलिए मंदिर और मस्जिद को शिक्षा का स्थान बनाना होगा।(राजकुमार,1988पृ011) उन्होनें कहा कि सभी धर्मों को अपनी–अपनी शिक्षा देनी चाहिए ताकि उनमें सहिष्णुता की भावना स्थापित हो सके। उनका मानना था कि– जब बालक को अपने धर्म का यथार्थ ज्ञान होगा तभी वह अन्य धर्म–मतावलम्बियों के साथ सहयोग व साहचर्य स्थापित कर सकेगा।(एनीबेसेंट,पृ021) एनी बेसेन्ट का मानना था कि राष्ट्र निर्माण के लिए पाश्चात्य विज्ञान, दर्शन, शिक्षा, भाषा के साथ यांत्रिक शिक्षा का अध्ययन आवश्यक है। अतः पाश्चात्य वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया तथा प्राचीन भारतीय आदर्शो एवं आधुनिक विचारों के समन्वय से भारतीय शिक्षा को एक आधुनिक रूप देने का प्रयास किया। उनका मानना था कि प्रत्येक भारतीय नागरिक को संस्कृत तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए, इससे उनका दृष्टिकोण विकसित होगा जिससे सामाजिक एवं राजनैतिक सुधार के कार्य आसान हो जायेंगे।

एनी बेसेन्ट ने प्रौढ़ शिक्षा, दलित वर्ग की शिक्षा, स्त्री शिक्षा एवं सामाजिक शिक्षा पर भी विशेष बल दिया। उस समय यूरोपीय समाज की तुलना में भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा अत्यन्त सोचनीय एवं दयनीय थी। स्व अस्तित्व से अनभिज्ञ घर की दीवारों के अन्दर पुरी तरह से पुरूषों पर आश्रित थीं। बहु विवाह, बाल विवाह, परदा प्रथा जैसी कुरीतियों से युक्त भारतीय समाज, नारी शिक्षा तथा उसके उत्थान का प्रबल विरोधी था। एनी बेसेन्ट ने कहा कि– महिलाओं को शिक्षित करके उनकी स्थिति को सुधारा जा सकता है, इससे वे अपने दायित्वों के साथ–साथ अपने अधिकारों के प्रति भी सजग होंगी। इसलिए सर्वप्रथम उनकी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए(भल्ला,2013 पृ0109) उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रीय उत्थान के लिए पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं का सहयोग भी आवश्यक है। उनका गहरा विश्वास था कि– भारत की मुक्ति नारी पर निर्भर करती है।(एनीबेसेंट,1993,पृ06) वे कहती थीं कि भारत के समक्ष सबसे बड़ा कार्य देश को आत्मनिर्भर बनाने एवं आत्मचेतना जागृत करने का है। अतः शीघ्र ही लड़कियों की शिक्षा के लिए 1904 ई में उन्होनें सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल के अन्तर्गत आधुनिक शिक्षा से युक्त एक "गर्ल्स स्कूल" खोला जिसने नारी शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बाद में यह भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का हिस्सा बन गया।(भल्ला,2013पृ0109) उनके प्रयासों के फलस्वरू॰ बंकीपुरा में एंग्लों इण्डियन संस्कृत हाईस्कूल, भावनगर में सनातन धर्म हाईस्कूल, कानपुर में थियोसोफिकल हाईस्कूल, मदनापल्ले में नेशनल हाईस्कूल तथा थियोसोफिकल एजुकेशनल ट्रस्ट से सम्बद्ध अन्य स्कूल स्थापित हुए।

दलितों के उत्थान के लिए उन्होनें दलित वर्ग के लिए शिक्षा उपलब्ध कराने की बात की और कहा कि–समाज के सभी अंगों का विकास होने पर ही समाज की उन्नति हो सकेगी अतः दलित वर्ग के लिए शिक्षा एवं उनका जीवन स्तर उच्च करना अनिवार्य है।(नागोरी,1995 पृ040) उन्होनें शिक्षा को मानवीय श्रम से जोड़ने पर बल दिया जिससे कि शिक्षा व्यवस्था सम्पूर्ण समाज के हित में हो। जिसके लिए उन्होनें विद्यार्थियों को व्यवसायिक शिक्षा देने की बात की। शिक्षा को श्रम से जोड़ने की महत्ता को बताते हुए कहा कि–शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक विकास करना होता है, इससे न केवल शारीरिक सौष्ठव बल्कि मानसिक सौष्ठव की वृद्धि हुआ करती है। अतः शिक्षा योजना में मानवीय श्रम को महत्व दिया जाना चाहिए।(एनीबेसेंटपृ072–73) एनी बेसेन्ट के शिक्षा का आधार स्तम्भ धर्म था ओर इसके साथ–साथ इस संस्था के युवकों को सामाजिक कार्य का भी प्रशिक्षण दिया जाता था। इनके प्रयास के फलस्वरूप "सन्स एण्ड डाटर्स आफ इण्डिया", "स्काउट गाइड आफ आनर" जैसी संस्थाए खोली गयी। इनसे केवल भारतीय ही नही बल्कि पश्चिमी देशों के भी बहुत से ऐसे लोग जुड़े रहते थे। जिन्हे केवल पारिश्रमिक के बदले या इसके बिना भी शिक्षण कार्य और उनके आदर्शों से प्रेम था। इन संस्थाओं की कार्य प्रणाली में जितना भी घाटा होता था। उनको श्रीमती बेसेन्ट स्वयं अपने जेब से पूरा करती थी।(अययर पृ056) एनी बेसेन्ट ने अपने कुछ सहयोगियों की सहायता से एक केन्द्रिय विश्वविद्यालय की योजना बनायी जो एक बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज" की सहायता से 1910 ई0 में चलायी गयी। वायसराय द्वारा इस विश्वविद्यालयी योजना के प्रार्थना पत्र को ब्रिटिश सम्राट के सम्मुख पेश किया गया। जिसके स्तम्भों से एनी बेसेन्ट के शिक्षा सम्बन्धी योजना, दृष्टिकोण एवं उद्देश्य के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है–(वही पृ056)

(1) उच्च शिक्षा की अधिक से अधिक जिम्मेदारी गैर सरकारी तथा स्वैच्छिक प्रयासों पर आधारित होनी चाहिए।

(2) प्रस्तावित विश्वविद्यालय किसी ऐसे महाविद्यालय को अपने से सम्बद्ध नही करेगा जिसमें दी जााने वाली शिक्षा में धर्म और नैतिकता को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त न हो। यह विभिन्न धर्मो के बीच किसी प्रकार का भेदभाव नही करेगा लेकिन किसी विशुद्ध धर्म निरपेक्ष संस्था को अपने से सम्बद्ध नही करेगा। यह अच्छे नागरिक पैदा करने का एक नर्सरी होगा

न कि ज्ञान के एक निश्चित स्तर के प्रमाण पत्र ढ़ालने वाली टकसाल।

(3) इसके अन्तर्गत भारतीय दर्शन, इतिहास और साहित्य को सर्वप्रथम स्थान दिया जायेगा और इन विषयों तथा भारत की प्रतिष्ठित भाषाओं को संस्कृति का माध्यम बनाया जायेगा। पाश्चात्य दर्शन का पर्याप्त अध्ययन तो होगा लेकिन प्रधानता पूर्वी दर्शन को ही मिलेगी और पाश्चात्य ज्ञान का प्रयोग विकासशील राष्ट्रीय जीवन को विकृत अथवा अपंग करने के लिए नही बल्कि समृद्ध करने के लिए किया जायेगा।

(4) शारीरिक श्रम करने वाले कार्यो तथा विभिन्न शिल्पों, कृषि एवं औद्योगिक व्यापारिक निर्माण के उपयोग में आने वाले विज्ञान एवं राष्ट्रीय समृद्ध की वृद्धि में सहायक पाश्चात्य ज्ञान का पूरा–पूरा लाभ उठाते हुए अपने यहॉ के अनेक पुराने लेकिन अब मिल रहे उद्योग–धन्धों को फिर से जीवित तथा विकसित करने के लिए भारतीय कलाओं तथा दस्तकारी के प्रशिक्षण की ओर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

(5) प्रस्तावित विश्वविद्यालय भारत के सरकारी विश्वविद्यालय की भॉति केवल परीक्षाओं का संचालन करेगा और बाद में एक शिक्षण संस्था का रूप ले लेगा तथा विश्वविद्यालय भी जीवन का असली आदर्श प्राप्त कर लेगा।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि एनी बेसेन्ट ने शिक्षा के संबध में अपने विचारों को व्यवहारिक रूप देने का प्रयास किया। 1916 ई0 में जब "सेन्ट्रल हिन्दू कालेज" ने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया तब उन्होनें 'थियोसोफिकल शिक्षा ट्रस्ट' के नाम से एक संस्था स्थापित की, जिससे पुरे देश में राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार किया जा सके। वह राष्ट्रीय शिक्षा योजना में धार्मिक शिक्षा की अनिवार्य रूप दिये जाने के पक्षधर थीं क्योंकि उनका मानना था कि–"राष्ट्रीय शिक्षा योजना में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य तत्व है।(एनीबेसेंट, पृ024) 1917 ई0 में उन्होनें अडयार में 'थियोसोफिकल फैटनिटी इन एजुकेशन' नामक संस्था की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा के विस्तार के लिए प्रयत्न करना था।

1971 ई0 में ही जब वे 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' की अध्यक्ष बनीं तब उन्होनें एक नेशनल एजुकेशन की योजना बनाई जो अलग–अलग इकाइयों में बनायी गयी थी– जैसे गॉवों की शिक्षा गॉव की लोगों की आवश्यकता अनुसार और इसी तरह शहरी शिक्षा केन्द्र भी बने, फिर नेशनल यूनिवर्सिटी स्थापित किया जायें ओर पुरे देश की आवश्यकताओं के अनुरूप बनायी जाये।, अलग–अलग क्षेत्रों में विश्वविद्यालय बनायें जाये जिसमें क्षेत्रीय भाषा के द्वारा शिक्षा को आगे बढ़ाया जाय। 1934 ई0 में एनी बेसेन्ट की शैक्षणिक सेवाओं की स्मृति में अडयार में 'बेसेन्ट मेमोरियल हाई स्कूल' की स्थापना हुई जिसने एनी बेसेन्ट के शैक्षणिक विचारों को व्यवहारिक रूप देने का कार्य किया।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि एनी बेसेन्ट ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त कमियों को दूर कर एक संतुलित व सुव्यवस्थित शिक्षा व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न किया साथ ही साथ अपने योजनाओं के द्वारा एक ऐसा शैक्षिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जिसका उद्देश्य एक तरफ तो व्यक्ति को सभ्य, सूसंस्कृत एवं शिक्षित कर उसका शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास करना था तो दुसरी तरफ राष्ट्र के लिए एक आदर्श नागरिक का निर्माण करना था। इसीलिए उन्होनें कहा कि राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा योजना होनी चाहिए जिससे समाज में व्याप्त दूषित व्यवस्था समाप्त हो सके। उन्होनें शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जागृत करने तथा प्राचीन भारतीय आदर्शो की पुनर्स्थापना का प्रयत्न भी किया। भारतीय शिक्षा के लिये की गयी उनकी सेवाओं के बारे मे प0 मदन मोहन मालवीय जी ने कहा है कि डॉ ऐनी बेसेन्ट वर्तमान संसार की प्रसिद्ध हस्तियो में से एक थीं। उनका भारत पर विशेष ऋण है। उन्होनें शिक्षा के हितों, धर्म के अध्ययन और भारत की स्वतंत्रता के लिये भी बड़ी मूल्यवान सेवाएं की है, अपने सहयोगियों के साथ मिलकर उन्होनें 1898 में बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू कालेज स्थापित किया और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित करने मे हार्दिक रुप से सहयोग दिया। आरम्भ काल से ही वह विश्वविद्यालय की कोर्ट, काउन्सिल, सीनेट तथा अन्य संस्थाओं की एक अति सम्मानित सदस्य रही थीं। 1921 ई0 मे उन्हें "डाक्टर ऑफ लेटर्स" की उपाधि देकर विश्वविद्यालय ने स्वयं अपने को सम्मानित किया। अति कृतज्ञता और स्नेह के साथ हम उन्हें स्मरण करते है।(अय्यर,1970,पृ094) श्री निवास शास्त्री नें भी कहा है कि–"मुझे अच्छी तरह याद है जैसे वह सब आज ही घटित हुआ हो कि अपनी अध्यात्मिक शक्ति से सेन्ट्रल हिन्दू कालेज के लिए अथक परिश्रम करके, कार्यकुशलता के एक ऊॅचे स्तर पर उसे पहुॅचाकर, यह पक्का करके कि उनके महान धार्मिक आदर्शों पर कमोवेश अमल होता रहेगा, उसके लिये अत्यन्त योग्य व सुसंस्कृत प्राध्यापकों की सेवाएं प्राप्त कर, इस सबके बाद जब बनारस विश्वविद्यालय स्थापित करने का समय आया तो उन्होनें बड़ी शान्तिपूर्वक यह कालेज पंडित मदन मोहन मालवीय को सौप दिया–यह विश्वास करके कि जो दीपक उन्होनें जलाया था वह उनके हाथों मे बराबर जलता रहेगा। सी0 पी0 रामास्वामी अय्यर ने लिखा है कि– ऐसी कौन सी दिशा थी, जिसमें एनी बेसेन्ट महान नहीं थी? ऐसा कौन सा खेत था, जिसकी जुताई एवं कटाई मे वह अगुवा न रही हों। उन्होनें अपने जीवन और संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र मे सभी जातियों और सभी देशों मे एक नयी जान ला दी थीं।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि भारत कि शिक्षा पद्धति जो ब्रिटिश काल में दिशाहीन हो रही थी, उसमें व्याप्त कमी को पूरा करने हेड शिक्षा में सुधार के लिये जो विचार तथा योजनाऍ एनी बेसेन्ट नें प्रस्तुत किया, यदि आज भी हम

उन विचारों का बारीकी से अध्ययन करे तो हमें वर्तमान नयी शिक्षा नीति में नयी दिशाएँ मिल सकती हैं।

सन्दर्भ

डॉ0 मित्तल, सतीश चन्द्रः राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में– भारत का स्वाधीनता संघर्ष, 1858–1947, प्रकाशन विभाग, अखिल भारतीय इतिहास संकलन *योजना,* 2012,

गुप्त, विश्वप्रकाश एवं मोहनी (1999) : *स्वतंत्रता संग्राम और महिलायें,* नई दिल्ली, नमन प्रकाशन

डॉ0 राजकुमार (1988): *एनी बेसेन्ट,* नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,,

भल्ला प्रवीन (2013): *मानव सेवी ऐनी बेसेन्ट,* नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन,

ऐनी बेसेन्ट(1993):एक विलक्षण प्रतिभा, डॉ0 ऐनी बेसेन्ट का भारत आगमन शताब्दी समारोह–1993, विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आकल्पित एवं प्रकाशित, जुलाई, 1993

भल्ला प्रवीन (2013): मानव सेवी ऐनी बेसेन्ट, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली,

नागोरी, एस एल (1995): एनी बेसेन्ट एवं भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर,

अय्यर रामास्वामी, सी0पी0,(1970) अनुवादकः सूर्य नारायण मुंशीः ऐनी बेसेन्ट, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार,